SC

SEAT No._____ No. of Printed Pages : 3

SARADAR PATEL UNIVERSITY, VALLABHVIDYANAGAR

[A-46]

S.Y.B.A(External) Examination

Friday

27th April 2018

2:00 TO 5:00 P.M.

HIN-200-Hindi Compulsory (For Non- English stream)

नोट:- हिंदी में शिरोरेखा बाँधना अनिवार्य है।

TOTAL MARKS-100

प्रश्न-१. सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (१६)

(अ)

जहाँ साँझ –सी जीवन छाया ,
ढीले अपनी कोमल काया |

नील-नयन से ढुलकाती हो ,

ताराओं की पाँति घनी री !

अथवा

कूक उठी सहसा तरु-वासिनी !

गा तू स्वागत का गाना ,

किसने तुझको अंतर्यामिनी ?

बतलाया उसका आना ?

(आ). जो पुराना है वह केवल इसी कारण अच्छा नहीं माना जा सकता , और जो नया है उसका भी तिरस्कार करना उचित नहीं | बुद्धिमान दोनों को कसौटी पर कसकर किसी एक को अपनाते हैं |

अथवा

लेखक के 'मैं' और पाठक के 'मैं' के बीच तादात्म्य स्थापित होता है, पर ऐसा शायद बहुत कम स्थितियों में हो पाता है कि लेखक का मंतव्य पाठक ठीक उसी अर्थ में ग्रहण करे सो रचनाकार को अभीष्ट हो |

प्रश्न -२. पठित दोहों के आधार पर कबीरदास की भक्तिभावना पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए | (१६)

अथवा

प्रश्न-२. 'संध्या सुंदरी ' कविता के काव्य-सौन्दर्य को उदघाटित करते हुए यह स्पष्ट कीजिये कि कविता में मानवीकरण का सुंदर प्रयोग किया गया है |

प्रश्न-३ निःसंदेह इस नयी सभ्यता ने व्यक्ति स्वातंत्र्य के पंजे , नाखून और दांत तोड़ दिये हैं , 'महाजनी सभ्यता' निबंध के आधार पर इस कथन की स्पष्टता कीजिये | (१६)

अथवा

प्रश्न-३. शिक्षा का संबंध भारतीयता से होना जरूरी है या नहीं ?

प्रश्न-४. सूचना के अनुसार उत्तर लिखिए :-

(क). हिंदी में अनुवाद कीजिये : (०८)

ખરું જોતાં નાટક સુખાંત છે એ વાત ઉપર બહુ ભાર મુકવાની જરૂર નથી. વાલ્મીકિ અને કાલિદાસ પ્રમાણે પણ સીતા અને રામનું પુનર્મિલન તો થાય છે જ , સીતાની નિર્દોષતા સ્વીકારાય છે જ, પણ તે પછી સીતા રામ સાથે સુખથી જીવન ગાળવાને બદલે પોતાના જીવવાનો હવે કોઈ ખાસ અર્થ ન જોતાં માતા પૃથ્વી પાસે પોતાનો વિલય પ્રાર્થે છે. ભવભૂતિ પણ પુનર્મિલન અને સીતાના અનવદ્ય શીલનો સ્વીકાર નીરુપે છે. તે પછી પ્રણાલિકા પ્રમાણે એમણે રામ-સીતાનો સહવાસ સૂચવ્યો છે અને સીતાનો વિલય નિરૂપ્યો નથી. એથી નાટકની કે રામસીતાના પરસ્પર સંબંધની સ્થિતિમાં કોઈ મૂલગત – મહત્વનો ફેર પડતો નથી.

(ख). मशीनी भाषा (०८)

प्रश्न-५. सूचना के अनुसार उत्तर लिखिए :-

(क). सार-संक्षेप लिखिए : (०८)

हमारे साहित्य पर धर्म की अतिशयता का प्रभाव दो प्रधान रूपों में पड़ा – आध्यात्मिकता की अधिकता होने के कारण हमारे साहित्य में एक ओर घोर पवित्र भावनाओं और जीवन-संबंधी गहन तथा गंभीर विचारों की प्रचुरता हुई और दूसरी ओर साधारण लौकिक भावों तथा विचारों का विस्तार अधिक हुआ | प्राचीन वैदिक साहित्य से लेकर हिंदी के वैष्णव साहित्य तक में हम यह बात पाते हैं | सामवेद के मनोहारी तथा मृदु –गंभीर सांसों से लेकर सूर तथा मीरा आदि की सरस रचनाओं तक में सर्वत्र परोक्ष भावों की अधिकता तथा लौकिक विचारों की न्यूनता देखने में आती है | अत: इस प्रकार का साहित्य रचा जाना चाहिए, जो सभी क्षेत्रों में विकास का साधन बन सके |

(ख). पल्लवन कीजिए :- (०८)

निज भाषा निज उन्नति को मूल है |

(ग). निम्नलिखित कहावतों का अर्थ बताकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :- (१०)

१. अँगुली पकडकर पहुँचा पकड़ना |
२. आँखों के अंधे नाम नयनसुख |
३. चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरते |

४. जो गरजता है सो बरसता नहीं।
५. दुधका जला छाछको भी फूंक-फूंककर पीता है।
६. फूल टहनी में ही अच्छा लगता है।
७. भागते भुत की लंगोटी ही सही।
८. सिर मुडाते ही ओले पड़े।
९. रस्सी जल गई बल न गया।
१०. घर का भेदी लंका ढाए।

(घ).निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :- (१०)

१. अंगूठा दिखाना
२. आंधी के आम
३. आँख मिलना
४. कलम तोडना
५. कलेजा चलनी होना
६. कोल्हू का बैल
७. गुड़ियों का खेल
८. चुल्लूभर पानी में डूब मरना
९. टससे मस न होना
१०. नौ-दो ग्यारह होना